IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 4, July 2026
Impact Factor: 8.2

हिंदी आदिवासी साहित्य में लोकसंस्कृति और पारंपरिक जीवन-मूल्यों का चित्रण

सत्येंद्र कुमार[1] and डॉ. राकेश आर्य[2]
[1]शोधार्थी, हिन्दी-विभाग
[2]सहायक प्रोफेसर, हिन्दी-विभाग
सनराइज विश्वविद्यालय, अलवर, राजस्थान

सारांश: हिंदी आदिवासी साहित्य समकालीन भारतीय साहित्य की एक महत्त्वपूर्ण धारा है, जिसमें आदिवासी समुदायों के जीवनानुभव, लोकसंस्कृति, प्रकृति-दृष्टि, सामुदायिक चेतना, परंपराएँ, श्रम-संस्कृति, लोकविश्वास तथा सामाजिक संघर्षों का सजीव चित्रण मिलता है। आदिवासी साहित्य को केवल शोषण, विस्थापन और संघर्ष का साहित्य मानना इसके व्यापक सांस्कृतिक स्वरूप को सीमित करना होगा। वास्तव में यह साहित्य आदिवासी समाज की उस जीवन-दृष्टि को अभिव्यक्त करता है जिसमें मनुष्य और प्रकृति के बीच गहरा सहजीवी संबंध स्थापित होता है। हिंदी की आदिवासी-केंद्रित कविताओं, कहानियों, उपन्यासों तथा आत्मकथात्मक रचनाओं में जंगल, नदी, पहाड़, भूमि, पशु-पक्षी और कृषि केवल जीवन-निर्वाह के साधन नहीं, बल्कि सामुदायिक अस्तित्व और सांस्कृतिक पहचान के अभिन्न अंग हैं। समकालीन अध्ययनों में भी प्रकृति-संवेदन, सामुदायिकता, समानता, मौखिक परंपरा और सांस्कृतिक अस्मिता को आदिवासी साहित्य के केंद्रीय तत्वों के रूप में रेखांकित किया गया है।

मुख्य संकेतक: - हिंदी आदिवासी साहित्य, लोकसंस्कृति, पारंपरिक जीवन-मूल्य, प्रकृति-दृष्टि, सामुदायिकता, लोकपरंपरा, आदिवासी अस्मिता।

I. परिचय

भारतीय समाज की सांस्कृतिक विविधता में आदिवासी समुदायों का विशेष स्थान है। भारत के विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों में निवास करने वाले आदिवासी समुदायों ने अपनी विशिष्ट भाषाओं, लोककलाओं, मिथकों, गीतों, नृत्यों, धार्मिक विश्वासों, सामाजिक संस्थाओं और पारंपरिक ज्ञान-व्यवस्थाओं के माध्यम से समृद्ध सांस्कृतिक विरासत विकसित की है। लंबे समय तक मुख्यधारा के साहित्यिक विमर्श में आदिवासी समाज को प्रायः बाहरी दृष्टि से प्रस्तुत किया गया, किंतु समकालीन आदिवासी विमर्श ने इस स्थिति में महत्त्वपूर्ण परिवर्तन किया। हिंदी साहित्य में आदिवासी जीवन से जुड़े लेखन ने आदिवासी समाज को केवल 'विषय' के रूप में नहीं, बल्कि अपने इतिहास, अनुभव और सांस्कृतिक चेतना वाले समुदाय के रूप में देखने की दृष्टि विकसित की है। वेसलर (2020) के अनुसार हाल के दशकों में दलित और आदिवासी लेखन हिंदी साहित्य में महत्त्वपूर्ण नई आवाज़ों के रूप में उभरा है और धीरे-धीरे शैक्षिक एवं साहित्यिक संस्थानों में भी स्थान प्राप्त कर रहा है।

आदिवासी साहित्य की मूल संवेदना जीवन और प्रकृति से जुड़ी है। उमा चौधरी (2020) ने आदिवासी समाज और साहित्य के संबंध को अत्यंत निकट मानते हुए वाचिक साहित्य को आदिवासी जीवन और मूल्य-व्यवस्था को समझने का महत्त्वपूर्ण माध्यम माना है। इस दृष्टि से आदिवासी साहित्य में लोकसंस्कृति केवल सांस्कृतिक सजावट नहीं है, बल्कि वह जीवन की संरचना का मूल आधार है। लोकगीतों में श्रम और उत्सव की अभिव्यक्ति, लोककथाओं में नैतिक शिक्षाएँ, मिथकों में समुदाय की उत्पत्ति और प्रकृति से संबंध तथा पर्व-त्योहारों में कृषि और पर्यावरणीय चक्र का प्रतिबिंब दिखाई देता है।

II. अध्ययन के उद्देश्य

इस अध्ययन के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं: -

1. हिंदी आदिवासी साहित्य में अभिव्यक्त लोकसंस्कृति के प्रमुख तत्वों का अध्ययन करना।

Copyright to IJARSCT
www.ijarsct.co.in
DOI: 10.48175/568

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 4, July 2026 Impact Factor: 8.2

2. आदिवासी साहित्य में प्रकृति और मनुष्य के पारंपरिक संबंध का विश्लेषण करना।
3. सामुदायिकता, समानता, सहयोग और श्रम जैसे पारंपरिक जीवन-मूल्यों का अध्ययन करना।
4. लोकगीत, लोककथा, मिथक, नृत्य, पर्व और अनुष्ठानों के साहित्यिक चित्रण को समझना।
5. आधुनिकता, बाजारवाद, विस्थापन और भूमंडलीकरण के संदर्भ में आदिवासी संस्कृति में आए परिवर्तनों का विश्लेषण करना।
6. हिंदी आदिवासी साहित्य को सांस्कृतिक अस्मिता और प्रतिरोध के माध्यम के रूप में समझना।

III.शोध-पद्धति

प्रस्तुत अध्ययन मुख्यतः गुणात्मक एवं वर्णनात्मक-विश्लेषणात्मक पद्धति पर आधारित है। इसमें 2010–2022 के मध्य प्रकाशित हिंदी साहित्य, शोध-पत्रों, आलोचनात्मक अध्ययनों तथा आदिवासी संस्कृति से संबंधित अकादमिक स्रोतों का द्वितीयक विश्लेषण किया गया है। अध्ययन के लिए विषयवस्तु-विश्लेषण की पद्धति अपनाई गई है। साहित्यिक सामग्री को प्रकृति, लोकविश्वास, सामुदायिक जीवन, श्रम-संस्कृति, लोकपर्व, पारंपरिक ज्ञान, स्त्री-अनुभव, सांस्कृतिक अस्मिता और आधुनिक परिवर्तन जैसी प्रमुख श्रेणियों में विभाजित करके व्याख्यायित किया गया है। इसके अतिरिक्त साहित्यिक प्रस्तुति और वास्तविक सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भ के बीच संबंध स्थापित करने के लिए समाजशास्त्रीय एवं सांस्कृतिक दृष्टिकोण का उपयोग किया गया है।

IV. हिंदी आदिवासी साहित्य और लोकसंस्कृति

हिंदी आदिवासी साहित्य में लोकसंस्कृति का स्वरूप अत्यंत व्यापक है। लोकसंस्कृति में केवल गीत, नृत्य और पर्व शामिल नहीं होते, बल्कि जीवन जीने की संपूर्ण पद्धति, सामाजिक संबंध, उत्पादन व्यवस्था, खान-पान, वेशभूषा, आवास, लोकविश्वास, पारंपरिक चिकित्सा, कृषि-ज्ञान और प्रकृति के साथ व्यवहार भी सम्मिलित होते हैं। आदिवासी साहित्य इन सभी तत्वों को सामुदायिक अनुभव के रूप में प्रस्तुत करता है।

आदिवासी समाज में वाचिक परंपरा का विशेष महत्त्व है। पीढ़ी-दर-पीढ़ी गीत, कथा, कहावत, मिथक और लोकज्ञान मौखिक रूप में हस्तांतरित होते रहे हैं। यही कारण है कि आदिवासी साहित्य की सांस्कृतिक संरचना लिखित साहित्य से आगे बढ़कर सामुदायिक स्मृति से जुड़ती है। इस संदर्भ में आदिवासी साहित्य का अध्ययन केवल मुद्रित रचनाओं के आधार पर नहीं, बल्कि उसके पीछे मौजूद लोकस्मृति और सांस्कृतिक परंपरा को ध्यान में रखकर किया जाना चाहिए।

V. प्रकृति-केन्द्रित जीवन-दृष्टि

हिंदी आदिवासी साहित्य में प्रकृति सबसे महत्त्वपूर्ण सांस्कृतिक प्रतीकों में से एक है। जंगल, नदी, पहाड़, खेत और पशु-पक्षी आदिवासी जीवन में आर्थिक संसाधन होने के साथ-साथ धार्मिक, सामाजिक और भावनात्मक अर्थ भी रखते हैं। प्रकृति को जीतने या नियंत्रित करने के बजाय उसके साथ सह-अस्तित्व की भावना आदिवासी जीवन-दृष्टि की प्रमुख विशेषता है।

इस साहित्य में जंगल केवल लकड़ी या खनिज का स्रोत नहीं, बल्कि समुदाय की स्मृति, आजीविका और पहचान का आधार है। इसी प्रकार भूमि केवल संपत्ति नहीं, बल्कि पूर्वजों और आने वाली पीढ़ियों के बीच संबंध का माध्यम है। इसीलिए जब विकास परियोजनाओं, खनन या औद्योगिकीकरण के कारण जंगल और भूमि से विस्थापन होता है, तो आदिवासी साहित्य उसे केवल आर्थिक संकट नहीं मानता; वह इसे सांस्कृतिक विस्थापन के रूप में भी देखता है।

आदिवासी पारंपरिक ज्ञान पर किए गए अध्ययनों से भी यह स्पष्ट होता है कि प्राकृतिक परिवेश ने उनके सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक व्यवहार को गहराई से प्रभावित किया है। 2022 के एक अध्ययन में बैगा समुदाय के पारंपरिक ज्ञान और संस्कृति पर विकास योजनाओं के प्रभाव का विश्लेषण करते हुए सांस्कृतिक परिवर्तन की प्रक्रिया को रेखांकित किया गया है।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 4, July 2026
Impact Factor: 8.2

VI. सामुदायिकता और सहयोग का मूल्य

आदिवासी जीवन-मूल्यों में सामुदायिकता केंद्रीय स्थान रखती है। हिंदी आदिवासी साहित्य में व्यक्ति की पहचान अक्सर उसके समुदाय से जुड़ी होती है। परिवार, कबीला, गाँव और सामुदायिक संस्थाएँ सामाजिक जीवन के महत्त्वपूर्ण आधार हैं। सामूहिक श्रम, सामूहिक उत्सव और सामूहिक निर्णय आदिवासी जीवन की सामाजिक संरचना को व्यक्त करते हैं।

आधुनिक व्यक्तिवादी जीवन-पद्धति के विपरीत आदिवासी साहित्य सामूहिक उत्तरदायित्व और सहभागिता को महत्त्व देता है। समुदाय के सुख-दुःख में भागीदारी, प्राकृतिक संसाधनों के सामूहिक उपयोग और पारस्परिक सहयोग को सामाजिक नैतिकता का हिस्सा माना जाता है। यही सामुदायिकता आधुनिक विकास मॉडल की आलोचना का आधार भी बनती है, क्योंकि बाजारवादी व्यवस्था व्यक्ति और संपत्ति को केंद्र में रखती है, जबकि आदिवासी जीवन-दृष्टि संबंधों और सामूहिक अस्तित्व को महत्त्व देती है।

VII. श्रम और कृषि-संस्कृति

आदिवासी लोकसंस्कृति में श्रम का अत्यंत सम्मानजनक स्थान है। कृषि, वनोपज संग्रह, शिकार, हस्तशिल्प और अन्य पारंपरिक कार्य केवल आर्थिक गतिविधियाँ नहीं हैं, बल्कि सांस्कृतिक जीवन का हिस्सा हैं। हिंदी आदिवासी साहित्य में श्रम करने वाला मनुष्य गरिमा और आत्मनिर्भरता का प्रतीक बनकर सामने आता है।

लोकगीतों और पर्वों में कृषि-चक्र का विशेष स्थान है। 2022 में तेलंगाना के आदिवासी समुदायों पर किए गए एक अध्ययन में पाया गया कि अनेक त्योहार कृषि-गतिविधियों, विशेषकर बुवाई और कटाई, तथा प्रकृति और पशुओं की आराधना से जुड़े होते हैं। इससे स्पष्ट होता है कि आदिवासी लोकसंस्कृति में आर्थिक गतिविधि, धार्मिक विश्वास और सामुदायिक उत्सव अलग-अलग क्षेत्र नहीं हैं, बल्कि एक-दूसरे से गहराई से जुड़े हुए हैं।

VIII. लोकपर्व, लोकगीत और लोकनृत्य

आदिवासी साहित्य में लोकपर्वों का चित्रण सामुदायिक जीवन की जीवंतता को व्यक्त करता है। पर्वों के अवसर पर गीत, नृत्य, संगीत और सामूहिक भोजन की परंपरा सामाजिक संबंधों को मजबूत करती है। लोकनृत्य केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि सामुदायिक स्मृति और सांस्कृतिक पहचान का माध्यम है।

लोकगीतों में प्रकृति, प्रेम, श्रम, ऋतु, जन्म, विवाह, मृत्यु, कृषि और सामाजिक संघर्ष के अनेक रूप दिखाई देते हैं। गीतों के माध्यम से वे अनुभव अभिव्यक्त होते हैं जिन्हें औपचारिक इतिहास अक्सर दर्ज नहीं करता। इसलिए लोकगीतों को आदिवासी समाज के सांस्कृतिक इतिहास के वैकल्पिक स्रोत के रूप में देखा जा सकता है।

2022 में भारतीय आदिवासी संस्कृति, कला और साहित्य के अध्ययन को बढ़ावा देने के लिए भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय द्वारा विभिन्न संस्थागत पहलों का उल्लेख किया गया था। इससे भी आदिवासी कला और सांस्कृतिक परंपराओं के संरक्षण के बढ़ते महत्त्व का संकेत मिलता है।

IX. लोकविश्वास, मिथक और पारंपरिक ज्ञान

आदिवासी साहित्य में मिथक और लोकविश्वास केवल अंधविश्वास के रूप में प्रस्तुत नहीं किए जा सकते। वे समुदाय की सामूहिक स्मृति, प्रकृति की व्याख्या और सामाजिक नैतिकता के वाहक हैं। किसी पहाड़, नदी, वृक्ष या पशु से संबंधित कथा समुदाय को अपने पर्यावरण के साथ भावनात्मक संबंध स्थापित करने में सहायता करती है।

पारंपरिक औषधीय ज्ञान, मौसम की पहचान, कृषि तकनीक, वनस्पतियों की जानकारी और प्राकृतिक संसाधनों के उपयोग से संबंधित ज्ञान भी लोकसंस्कृति का महत्त्वपूर्ण हिस्सा है। आधुनिक विकास और बाजार व्यवस्था के विस्तार के कारण इस ज्ञान-व्यवस्था के सामने संरक्षण की चुनौती उत्पन्न हुई है। आदिवासी साहित्य इन परिवर्तनों को सांस्कृतिक स्मृति के संकट के रूप में अभिव्यक्त करता है।

X. स्त्री और आदिवासी लोकसंस्कृति

हिंदी आदिवासी साहित्य में आदिवासी स्त्री केवल पीड़ित पात्र के रूप में उपस्थित नहीं होती, बल्कि वह श्रम, परिवार, संस्कृति और सामुदायिक जीवन की सक्रिय वाहक होती है। कृषि, वनोपज संग्रह, घरेलू कार्य, लोकगीत, पर्व-त्योहार और पारंपरिक ज्ञान के संरक्षण में उसकी महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 4, July 2026 Impact Factor: 8.2

आदिवासी स्त्री का अनुभव जाति, वर्ग, लिंग और सांस्कृतिक हाशियाकरण के अनेक स्तरों से प्रभावित हो सकता है। इसलिए आदिवासी साहित्य में स्त्री-विमर्श को व्यापक सामाजिक और सांस्कृतिक संदर्भ में समझना आवश्यक है। स्त्री के अनुभवों के माध्यम से साहित्य आदिवासी समाज की आंतरिक संरचना के साथ-साथ बाहरी शोषण और विस्थापन की स्थितियों को भी सामने लाता है।

सांस्कृतिक अस्मिता और प्रतिरोध

हिंदी आदिवासी साहित्य में लोकसंस्कृति सांस्कृतिक प्रतिरोध का माध्यम भी बनती है। जब बाहरी शक्तियाँ आदिवासी भूमि, जंगल, भाषा और जीवन-पद्धति पर नियंत्रण स्थापित करने का प्रयास करती हैं, तब लोकभाषा, लोकगीत, मिथक और पारंपरिक स्मृतियाँ अपनी पहचान बचाने के साधन बन जाती हैं।

आदिवासी साहित्य में अस्मिता का प्रश्न इसलिए केवल राजनीतिक अधिकारों तक सीमित नहीं है। भाषा, संस्कृति, भूमि, जंगल, पूर्वजों की स्मृति और सामुदायिक जीवन की रक्षा भी अस्मिता का हिस्सा है। वेसलर (2020) ने हिंदी साहित्य में आदिवासी आवाज़ों के उभरने को हाशियाकरण से पहचान की पुनर्खोज की प्रक्रिया के रूप में देखा है।

XI. आधुनिकता, भूमंडलीकरण और सांस्कृतिक परिवर्तन

आधुनिकता ने आदिवासी जीवन में शिक्षा, संचार, स्वास्थ्य, रोजगार और राजनीतिक जागरूकता के नए अवसर पैदा किए हैं, लेकिन इसके साथ सांस्कृतिक परिवर्तन की चुनौती भी सामने आई है। औद्योगिकीकरण, शहरीकरण, बाजारवाद और विकास परियोजनाओं ने पारंपरिक जीवन-व्यवस्था को प्रभावित किया है।

डिजिटल मीडिया भी इस परिवर्तन का एक महत्त्वपूर्ण माध्यम है। 2022 के एक अध्ययन में ओडिशा के लोढ़ा समुदाय में नए मीडिया की उपलब्धता और सामाजिक-सांस्कृतिक जीवन के बीच संबंध का अध्ययन किया गया तथा सांस्कृतिक अलगाव और परिवर्तन की प्रक्रियाओं पर ध्यान दिया गया। हिंदी आदिवासी साहित्य इसी बदलती परिस्थिति में परंपरा और आधुनिकता के बीच संवाद स्थापित करता है।

इस संदर्भ में आदिवासी साहित्य आधुनिकता का पूर्ण विरोध नहीं करता। इसके बजाय वह ऐसी आधुनिकता की आवश्यकता पर बल देता है जिसमें विकास के साथ सांस्कृतिक अधिकार, पर्यावरणीय संतुलन और सामुदायिक स्वायत्तता भी सुरक्षित रहें।

हिंदी साहित्य में आदिवासी जीवन के चित्रण की समस्या

हिंदी साहित्य में आदिवासी जीवन के चित्रण की एक प्रमुख समस्या प्रतिनिधित्व की है। जब किसी समुदाय को बाहरी लेखक अपनी दृष्टि से चित्रित करता है तो उसके अनुभवों का चयन और व्याख्या बाहरी दृष्टिकोण से प्रभावित हो सकती है। इसलिए आदिवासी साहित्य के मूल्यांकन में यह प्रश्न महत्त्वपूर्ण हो जाता है कि आदिवासी जीवन को कौन चित्रित कर रहा है और किस दृष्टि से कर रहा है। समकालीन शोध में यह बात सामने आई है कि हिंदी साहित्य में आदिवासी जीवन के चित्रण को केवल सहानुभूति के आधार पर नहीं, बल्कि आत्म-अभिव्यक्ति, अस्मिता और प्रतिनिधित्व के प्रश्नों के साथ समझना चाहिए। 2019 के एक शोध-अध्ययन में समकालीन हिंदी उपन्यासों में आदिवासी जीवन, समाज और विद्रोह के विभिन्न पक्षों का विश्लेषण किया गया है।

XII. चर्चा

अध्ययन से स्पष्ट होता है कि हिंदी आदिवासी साहित्य में लोकसंस्कृति जीवन की सजावटी पृष्ठभूमि नहीं बल्कि कथा और काव्य की वैचारिक संरचना का मूल तत्व है। प्रकृति, समुदाय, श्रम, परंपरा और सांस्कृतिक स्मृति एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं। इस साहित्य में पारंपरिक जीवन-मूल्य आधुनिक सभ्यता की आलोचना के लिए भी उपयोग किए जाते हैं।

विशेष रूप से तीन प्रमुख मूल्य उभरकर सामने आते हैं - प्रकृति के साथ सह-अस्तित्व, सामुदायिक सहयोग और श्रम की गरिमा। इन मूल्यों के आधार पर आदिवासी साहित्य आधुनिक विकास की उन अवधारणाओं पर प्रश्न उठाता है जो केवल आर्थिक वृद्धि को प्रगति का आधार मानती हैं। इस प्रकार आदिवासी साहित्य एक वैकल्पिक जीवन-दृष्टि प्रस्तुत करता है जिसमें मानव और प्रकृति के संबंध को प्रतिस्पर्धा के बजाय सह-अस्तित्व के आधार पर समझा जाता है।

साथ ही यह भी ध्यान रखना आवश्यक है कि आदिवासी समाज एकरूप नहीं है। भारत के विभिन्न आदिवासी समुदायों की भाषाएँ, धार्मिक परंपराएँ, आर्थिक संरचनाएँ और सांस्कृतिक प्रथाएँ अलग-अलग हैं। अतः हिंदी आदिवासी साहित्य को किसी एक सार्वभौमिक

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 4, July 2026 Impact Factor: 8.2

आदिवासी अनुभव के रूप में प्रस्तुत करना उचित नहीं होगा। विभिन्न समुदायों के विशिष्ट अनुभवों और ऐतिहासिक परिस्थितियों को ध्यान में रखकर ही उसका आलोचनात्मक अध्ययन किया जाना चाहिए।

XIII. निष्कर्ष

हिंदी आदिवासी साहित्य में लोकसंस्कृति और पारंपरिक जीवन-मूल्यों का चित्रण भारतीय साहित्य में एक महत्त्वपूर्ण वैकल्पिक सांस्कृतिक दृष्टि प्रस्तुत करता है। यह साहित्य आदिवासी जीवन को केवल गरीबी, शोषण और संघर्ष के रूप में नहीं देखता, बल्कि उसकी सांस्कृतिक समृद्धि, सामुदायिक चेतना, प्रकृति-प्रेम, श्रम-गरिमा, पारंपरिक ज्ञान और सामाजिक सहयोग को भी केंद्र में रखता है।

लोकगीत, लोककथा, मिथक, पर्व, नृत्य, कृषि और वाचिक परंपराएँ आदिवासी समाज की सांस्कृतिक स्मृति को जीवित रखने का कार्य करती हैं। हिंदी आदिवासी साहित्य इन परंपराओं को लिखित अभिव्यक्ति प्रदान करते हुए उन्हें व्यापक सामाजिक विमर्श का हिस्सा बनाता है। साथ ही विस्थापन, औद्योगिकीकरण, बाजारवाद और आधुनिकता के कारण उत्पन्न सांस्कृतिक संकट को भी सामने लाता है।

अतः हिंदी आदिवासी साहित्य का महत्त्व केवल साहित्यिक नहीं, बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक और पर्यावरणीय भी है। यह साहित्य हमें विकास, आधुनिकता और प्रगति की प्रचलित अवधारणाओं पर पुनर्विचार करने तथा प्रकृति-सम्मत, सामुदायिक और मानवीय जीवन-मूल्यों की प्रासंगिकता समझने का अवसर देता है। 2010–2022 के विमर्श में इसकी सबसे महत्त्वपूर्ण विशेषता यह रही कि आदिवासी संस्कृति को 'पिछड़ेपन' के प्रतीक के बजाय ज्ञान, पहचान और वैकल्पिक जीवन-दृष्टि के स्रोत के रूप में देखने की प्रवृत्ति मजबूत हुई।

संदर्भ सूची

1. चौधरी, यू. (2020)। हिन्दी साहित्य में इब्रेजुएला। अंतर्राष्ट्रीय हिंदी एवं सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका।
2. वेस्लर, एच. (2020). हाशिए पर जाने से लेकर पहचान की पुनः खोज तक: हिंदी साहित्य में दलित और आदिवासी आवाज़ें। स्कैंडो-स्लाविका, 66(2), 159-174।
3. चट्टोपाध्याय, के., और मोहंती, एस. (2022)। न्यू मीडिया और सांस्कृतिक वियोग: भारत के लोढ़ा आदिवासी समुदाय पर एक अध्ययन। एशियन जर्नल ऑफ सोशल साइंस, 50(2), 137-146।
4. बघेल, वाई.ए., और पाटिल, जी. (2022)। अचानकमार-अमरकंटक बायोस्फीयर रिजर्व: बैगा का विकास और पारंपरिक ज्ञान। इंडियन जर्नल ऑफ ट्रेडिशनल नॉलेज।
5. देशमुख, एन. (2022)। जाब्ते लोककला और जाब्ते साहित्य का महत्व. शोधपरक अध्ययन.
6. देशमुख, एन. (2022)। 21वीं सदी का जनजातीय समाज और हिन्दी साहित्य। समकालीन वैज्ञानिक अध्ययन.
7. मराले, ए. (2022)। 21वीं सदी की हिंदी कविता में चित्रित जनाब। हिंदी साहित्य एवं जापानी भाषा अध्ययन।
8. भारत सरकार, संस्कृति मंत्रालय। (2022, 28 जुलाई)। संस्कृति मंत्रालय अपने स्वायत्त निकायों के माध्यम से आदिवासी संस्कृति, कला और साहित्य में अनुसंधान और अध्ययन के लिए विभिन्न पहल करता है। प्रेस सूचना ब्यूरो.
9. रानी, एम., और रानी, एन. (2019)। जनजातीय समुदाय की समस्याएं एवं चुनौतियाँ पर एक लेख: हिन्दी साहित्य में जनजातीय समुदायों के संबंध में चुनौतियाँ एवं भ्रांतियाँ। संबद्ध शिक्षा में एडवांस और स्कॉलरली रिसर्च जर्नल।